पाश्चात्य दर्शन में अनीश्वरवाद का अस्तित्वः सिगमंड फ्रायड, कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक नीत्शे के विशेष सन्दर्भ में

ज्योत्स्ना मिश्रा (शोधार्थिनी- दर्शनशास्त्र)

डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फ़ैज़ाबाद ।

नास्तिकता अथवा नास्तिकवाद या अनीश्वरवाद (Atheism), वह सिद्धांत है जो जगत् की सृष्टि करने वाले, इसका संचालन और नियंत्रण करनेवाले किसी भी ईश्वर के अस्तित्व को सर्वमान्य प्रमाण के न होने के आधार पर स्वीकार नहीं करता। (नास्ति = न + अस्ति = नहीं है, अर्थात ईश्वर नहीं है), नास्तिक लोग ईश्वर (भगवान) के अस्तित्व का स्पष्ट प्रमाण न होने कारण झूठ करार देते हैं। अधिकांश नास्तिक किसी भी देवी देवता, परालौकिक शक्ति, धर्म और आत्मा को नहीं मानते। हिन्दू दर्शन में नास्तिक शब्द उनके लिये भी प्रयुक्त होता है जो वेदों को मान्यता नहीं देते क्योंकि वेदों को विश्व का सर्वप्रथम धर्म ग्रन्थ माना जाता है इसलिए जब वैदिक युग के दौरान कोई दूसरा प्रभावशाली धर्म नहीं था तब जो वेद मानने से इंकार करता था उसे नास्तिक बोल दिया जाता था।

धर्म पर सिगमंड फ्रायड के विचार उनकी कई पुस्तकों और निबंधों में वर्णित है। नीत्शे की रचनाओं का दार्शनिक जगत पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उसकी पुस्तक "ज़रथुस्त्र की वाणी" (Thus Spoke Zarathustra) विश्व की श्रेष्ठतम साहित्यिक कृतियों में गिनी जाती है। इसी प्रकार पुण्य और पाप के आगे (Beyond Good and Evil- Jenseits von Gut und Bose) तथा "मूल्यों की परंपरा" (On the Genealogy of Morality- Zur Genealogie der Moral) दर्शन में नये मोड़ प्रस्तुत करती है। मूल रूप से 1925 में प्रकाशित "एक आत्मकथात्मक अध्ययन", में फ्रायड ने कहा कि "मेरे माता-पिता यहूदी थे, और मैं खुद एक यहूदी बनकर रह गया। फ्रायड बताते हैं कि धर्म और न्यूरोसिस मानव मस्तिष्क के समान उत्पाद हैं: न्यूरोसिस, अपने बाध्यकारी व्यवहार के साथ, "एक व्यक्तिगत धार्मिकता" है, और धर्म, अपने दोहराव के अनुष्ठानों के साथ, एक "सार्वभौमिक जुनूनी न्यूरोसिस" है। फ्रायड एक शक्तिशाली पिता के लिए शिशु की जरूरत के आधार पर भगवान को भ्रम मानते हैं; धर्म, सभ्यता के विकास में हिंसक आवेगों को रोकने में हमारी मदद करने के लिए आवश्यक है, अब इसे कारण और विज्ञान के पक्ष में निर्धारित किया जा सकता है। फ्रायड के अनुसार, धर्म की उत्पत्ति पूर्व-ऐतिहासिक सामूहिक अनुभवों से हुई, जो कुलदेवता और कुलदेवता के रूप में दमित और अनुष्ठान बन गए। फ्रायड ने धर्म की उत्पत्ति को घृणा, भय, और ईर्ष्या जैसी भावनाओं के लिए जिम्मेदार ठहराया। इन भावनाओं को उन बेटों के कबीले में पिता

की ओर निर्देशित किया जाता है, जो महिलाओं के प्रति यौन इच्छाओं से वंचित हैं। फ्रायड ने टोटेम धर्मों को अत्यधिक भावना, दाने की कार्रवाई और अपराध के परिणाम के लिए जिम्मेदार ठहराया।

फ्रायड एक अलौकिक शक्ति के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता था जिसने हमें एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने के लिए पूर्व-प्रोग्राम किया है। आईडी के बारे में उनका विचार बताता है कि जब लोग अहंकार या सुपररेगो के अनुरूप नहीं होते हैं तो लोग कुछ खास तरीकों से क्यों कार्य करते हैं। ''धर्म एक भ्रम है और यह इस तथ्य से अपनी ताकत प्राप्त करता है कि यह हमारी सहज इच्छाओं के साथ आता है।" फ्रायड का मानना था कि लोग चिंता और तनाव के लिए स्पष्टीकरण देने के लिए धर्म पर भरोसा करते हैं वे जानबूझकर विश्वास नहीं करना चाहते हैं, फ्रायड ने तर्क दिया कि मानवता ने भगवान को अपनी छवि में बनाया। यह किसी भी प्रकार के धर्म के विचार को उलट देता है क्योंकि उनका मानना था कि इसका निर्माण मन द्वारा किया गया है। मन की भूमिका कुछ ऐसी है कि फ्रायड ने बार-बार इस बारे में बात की क्योंकि उनका मानना था कि ड्राइव और बलों के आधार पर चेतन और अचेतन दोनों निर्णयों के लिए मन जिम्मेदार है। 'मूसा और एकेश्वरवाद' (Moses and Monotheism), उनकी अंतिम पुस्तक है। वह आगे चलकर मनुष्यों को देवताओं के निर्माण का श्रेय देता है: "... हम जानते हैं कि, देवताओं की तरह, [राक्षस] केवल मनुष्य की मानसिक शक्तियों के उत्पाद हैं वे किसी चीज से और बाहर से निर्मित हुए हैं।" यह विचार कि धर्म लोगों के लिए नैतिक तरीके से व्यवहार करने का कारण बनता है, फ्रायड के अनुसार गलत है क्योंकि उनका मानना था कि कोई अन्य बल लोगों के कार्य करने के तरीकों को नियंत्रित करने की शक्ति नहीं रखता है। अचेतन इच्छाएँ लोगों को तदनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं। फ्रायड ने एक महत्वपूर्ण अध्ययन किया कि लोग समूह सेटिंग में कैसे कार्य करते हैं और बातचीत करते हैं। उनका मानना था कि लोग समूह की मांगों और बाधाओं के अनुसार अलग-अलग तरीकों से कार्य करते हैं। उनकी किताब में समूह मनोविज्ञान और अहंकार का विश्लेषण, फ्रायड ने तर्क दिया कि चर्च और संगठित धर्म एक ''कृत्रिम समूह" बनाते हैं जिसे एक साथ रखने के लिए एक बाहरी बल की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के समूह में, सब कुछ उस बाहरी बल पर निर्भर है और इसके बिना, समूह अब मौजूद नहीं होगा। फ्रायड के अनुसार समूह आवश्यक हैं, ताकि इसमें कमी आए अहंकार सभी लोगों में, समान स्तर पर सभी को रखकर, दूसरों के साथ कामेच्छा संबंध बनाकर। विभिन्न अहं के साथ विभिन्न लोगों के बीच समानता लोगों को एक दूसरे के साथ की पहचान करने की अनुमति देती है। यह धर्म के विचार से संबंधित है क्योंकि फ्रायड का मानना था कि लोगों ने इन समूह संबंधों को बनाने के लिए धर्म का निर्माण किया, जिसके लिए वे अनजाने में तलाश करते हैं।

उन्नीसवीं सदी के आरम्भ के कुछ समय पहले मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में विकसित हुआ। इससे पहले मनोविज्ञान को दर्शन के अंतर्गत पढ़ा जाता था। उस वक्त मनोविज्ञान का उद्देश्य वयस्क मानव की चेतना का विश्लेषण और अध्ययन करना था। फ्रायड ने इस परम्परागत ''चेतना के मनोविज्ञान" का विरोध किया और मनोविश्लेषण सम्बन्धी कई नई संकल्पनाओं का प्रतिपादन किया जिस पर हमारा आधुनिक मनोविज्ञान टिका हुआ है।

सन् 1900 फ्रायड के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण वर्ष था। इसी वर्ष उनकी बहुचर्चित पुस्तक ''इंटरप्रेटेशन ऑफ ड्रीम" का प्रकाशन हुआ, जो उनके और उनके रोगियों के स्वप्नों के विश्लेषण के आधार पर लिखी गई थी। इसमें उन्होंने बताया कि सपने हमारी अतृप्त इच्छाओं का प्रतिबिम्ब होते हैं। इस पुस्तक ने उन्हें प्रसिद्ध बना दिया।

यहूदी वकील परिवार में पैदा हुए कार्ल मार्क्स वह व्यक्ति हैं, जिनका ऐतिसाहिक भौतिकवाद एक विचारधारा के रूप में करोड़ों लोगों के लिए चेतना स्रोत के रूप में मौजूद है। कानून, इतिहास और दर्शन का अध्ययन करने के बाद मशहूर ग्रीक दार्शनिक एपीक्यूरस के दर्शन पर शोध-प्रबंध प्रस्तुत करने वाले कार्ल मार्क्स प्रोफेसर बनना चाहते थे। दार्शनिक हेगेल की बौद्धिक विरासत से प्रभावित कार्ल मार्क्स अनीश्वरवादी और भौतिकवादी नतीजे निकालने की कोशिश कर रहे थे। साथी लुडविग फायरबाख ने उनको अध्यापन से वंचित किया जिनकी "ईसाई धर्म की सार" शीर्षक किताब की भौतिकवादी व्याख्या कर मार्क्स भौतिकवादी हो गए।

भौतिकवादी मार्क्स आत्मा, परमात्मा और माया जैसी अमूर्त्त धारणाओं के फेर में नहीं पड़ता। हीगेल की पुस्तक 'फिलास्फी ऑफ राइट' की आलोचना करते हुए वह धर्म को जनसाधारण के लिए अफीम बताता है। 'थीसिस ऑन फायरबाख', 'क्रिटीक आन फिलास्फी ऑफ राइट' ऐसी ही पुस्तकें हैं, जिनमें उसके धर्म-संबंधी विचारों की आलोचना की झलक है। एक अन्य पुस्तक में उसने हीगेल के शिष्य और अपने मित्र बूनो बायर की आलोचना की थी, लेकिन पेरिस क्रांति की असफलता के बाद उसको अपने चिंतन के अधूरेपन की अनुभूति होती है। उसको लगता है कि 'सर्वहारा' और 'पूंजीपति' की विपरीतधर्मिता 'काले और 'सफेद, 'अच्छे'और 'बुरे की द्वैत जितनी ही आभासी है। आमूल परिवर्तन के अभाव में ही सर्वहारा राज्य के सर्वहारा अधिनायकवादी राष्ट्र में बदलते देर नहीं लगती।

दुनिया को बदलने की कामना के साथ मार्क्स ने वर्ग–संघर्ष का सिद्धांत प्रस्तुत किया। इसकी प्रेरणा उसको हीगेल के दार्शनिक सिद्धांत 'द्वंद्ववाद' से मिली थी। हीगेल के 'शुभ एवं 'अशुभ के द्वंद्व को उसने सर्वहारा और पूंजीपति के द्वंद्व के रूप में देखा था। उल्लेखनीय है कि हीगेल से बहुत पहले शंकराचार्य ने जीवन की

व्याख्या के लिए आत्मा और परमात्मा के द्वैत का विचार प्रस्तुत किया था। कार्य-कारण संबंधों की व्याख्या करते हुए उन्होंने सृष्टि की रचना में माया की अतार्किक-अवैज्ञानिक परिकल्पना की थी। उनसे पहले सांख्य दर्शन में भी सृष्टिरचना को प्रकृति एवं पुरुष के संपर्क द्वारा समझाने की कोशिश की गई।

फ्रेडरिक नीत्शे (Friedrich Nietzsche) (15, अक्टू, 1844 से 25, अगस्त 1900) जर्मनी का दार्शनिक था। मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद एवं परिघटनामूलक चिंतन (Phenomenalism) के विकास में नीत्शे की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। व्यक्तिवादी तथा राज्यवादी दोनों प्रकार के विचारकों ने उससे प्रेरणा ली है। हालाँकि नाजी तथा फासिस्ट राजनीतिज्ञों ने उसकी रचनाओं का दुरुपयोग भी किया। जर्मन कला तथा साहित्य पर नीत्शे का गहरा प्रभाव है। भारत में भी इकबाल आदि कवियों की रचनाएँ नीत्शेवाद से प्रभावित हैं।

ईसाई मत के परमार्थवाद, समाजवाद, सामाजिक प्रगति की नियतिवादी व्याख्या पर (चाहे वह हीगेल प्रदत्त इतिहासवादी हो या डार्विन द्वारा प्रतिपादित विकासवादी) तथा बेंथम और जे. एस. मिल के उपयोगितावाद पर नीत्शे कड़ा प्रहार करता है। प्रोटेस्टेंट पृष्ठभूमि तथा प्राचीन ग्रीक साहित्य के आरंभिक परिचय ने उसे इन विचार परंपराओं के विरोधी संस्कार दे दिए थे, परंतु कांट की ज्ञानमीमांसा, शोपेनहॉवर के चिंतन, जर्मन साहित्य तथा कला में व्याप्त स्वच्छंदतावाद (रोमांटिसिज्म), तुलनात्मक नीतिशास्त्र तथा स्वयं विकासवाद ने उसके लिए दार्शनिक आधारभूमि का कार्य किया। कांट के अनुसार हम निज-रूप पदार्थों को नहीं जान सकते क्योंकि अनुभव के प्रदत्त ज्ञान बनने में ज्ञानेंद्रियों के तथा बुद्धि के नियमों से वे प्रतिबंधित हो जाते हैं तथा समस्त ज्ञान में अनुस्यूत होने के कारण ये नियम ही सर्वाभौम होते हैं। नीत्शे की व्याख्यानुसार ये नियम भी सर्वाभौम नहीं होते, वे स्वयं हमारी रुचियों से, मूल्यों एवं संकल्पों से, प्रतिबंधित होते हैं। 'हम सत्य को ही क्यों जानना चाहते हैं, क्यों नहीं असत्य, अनिश्चिता या अज्ञान को जानना चाहते?' नीत्शे का उत्तर है- अनिश्चितता में हमें जीने की संभावना नहीं प्रतीत हाती। ज्ञान इस विश्व को व्यवस्थित, सुनियोजित एवं पूर्वानुमेय बनाता है। अतः हमारा ज्ञान और इसलिए यह विश्व हमारे ''जीने के संकल्प" का परिणाम है। परंतु जीवन का अर्थ है आत्मसातीकरण, विस्तार तथा शक्ति का संकल्प। अतः "शक्ति का संकल्प" ही सार्वभौम सत्य है, यही हमारे ज्ञान के रूप को निर्मित करता है। शक्ति के संकल्प की धारणा ही अतिमानव की सृष्टि को प्रेरित करती है जो कि नीत्शे के चिंतन का आधार है।

मानव-व्यक्तित्व का विकास ही मानव की क्षमताओं को प्रकट करेगा, यह सिद्धान्त नीत्शे के दर्शन की आत्मा है। मानव साधन है पृथ्वी पर अतिमानव के अवतरण का, परन्तु यह अवतरण विकासवाद के अनुसार न होकर मानव के सक्रिय एवं सावधान प्रयत्नों का परिणाम होगा। सहज जीवन और उसके लिए स्वेच्छा से अपनाया हुआ अनुशासन नीत्शे के आदर्श व्यक्ति की कसौटी है। व्यक्ति को रूढ़ियों का नहीं,

श्रेष्ठ पुरुषों का अनुकरण करना चाहिए। प्रगाति के लिए नीत्शे उच्च वर्ग की मूल्यपरम्परा का स्थापित होना आवश्यक समझता है। हिंदू वर्ण-व्यवस्था भी कभी-कभी उसे अपने आदर्श के अनुकूल प्रतीत होती है, एवं इसी आधार पर वह मनुस्मृति को बाइबिल से श्रेष्ठ ग्रन्थ मानता है। "ईश्वर की मृत्यु हो गई है" नीत्शे की प्रसिद्ध उक्ति है, परन्तु इस उक्ति के द्वारा वह मूल्यों में शाश्वतवाद के अन्त का तथा मानव-मन में व्याप्त अनास्था का निर्देश तो करना ही चाहता है, साथ ही वह यह भी स्पष्ट करना चाहता है कि श्रेष्ठ पुरुष ही अब मानव की सबसे बड़ी आशा है। जब ईश्वर ही नहीं तो मनुष्य अपने प्रत्येक कर्म के लिये स्वंय उत्तरदायी है। सार्त्र मानता है कि-ईश्वर नहीं है अतः मनुष्य स्वतंत्र है। सार्त्र संघर्ष में ही मानव जीवन की गति को स्वीकारते हैं।

समय को लेकर मौलिक चिंतन पश्चिम में इमानुएल कांट के दर्शन में प्राप्त होता है। विशेषकर समय और ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में। क्या ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई? अथवा यह हमेशा ऐसा ही था? इमानुएल कांट के लिए यह विवेचना का विषय था। कांट जीवन में नैतिक मूल्यों को महत्त्व देता था और विचारों से उसका द्रष्टिकोण समन्वयवादी था। उसको लगता कि समय के प्रति लोगों के मन में समाया डर अनेक नैतिक समस्याएं खड़ी कर देता है। भयभीत मनुष्य दूसरों को भूलकर केवल अपनी चिंता करने लगता है। इसलिए समय और ब्रह्मांड के अस्तित्व को लेकर तत्कालीन चिंताएं उसके दर्शन का हिस्सा भी बनीं। दोनों पर विचार करने के बाद उसको लगा कि दोनों ही विचारधाराओं में न केवल अंतर्विरोध हैं, बल्कि वे अतिवादी भी हैं। यदि यह माना जाए कि किसी बिंदू पर ब्रह्मांड की शुरुआत हुई तो फिर कर्ता ने शुरुआत के लिए अनंतकाल तक प्रतीक्षा क्यों की? आखिर क्या कमी थी, जो अपने संरचना को लंबे समय तक दबाए रखा। और यदि यह मान लिया जाए कि ब्रह्मांड अनंतकालीन सत्ता है, उसमें बस परिवर्तन होते रहते हैं हैं तो ब्रह्मांड ने अपनी पुरानी स्थिति से, इसको बिग बैंग कहें या कुछ और, वर्तमान अवस्था तक आने में इतना लंबा समय क्यों लिया? कांट ने इन दोनों धारणाओं को क्रमशः 'थीसिस'और 'एंटीथीसिस' का नाम दिया। लेकिन समय को लेकर वह किसी ठोस नतीजे पर नहीं पहुंच सका।

नास्तिक मानने के स्थान पर जानने पर विश्वास करते हैं। वहीं आस्तिक किसी न किसी ईश्वर की धारणा को अपने संप्रदाय, जाति, कुल या मत के अनुसार बिना किसी प्रमाणिकता के स्वीकार करता है। नास्तिकता इसे अंधविश्वास कहती है क्योंकि किसी भी दो धर्मों और मतों के ईश्वर की मान्यता एक नहीं होती है। नास्तिकता रूढ़िवादी धारणाओं के आधार नहीं बल्कि वास्तविकता और प्रमाण के आधार पर ही ईश्वर को स्वीकार करने का दर्शन है। नास्तिकता के लिए ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करने के लिए अभी तक के सभी तर्क और प्रमाण अपर्याप्त है।

सन्दर्भ सूची:

1. डॉ ० याकूब मसीह "धर्म दर्शनः प्राच्य एवं पाश्चात्य" भारतीय भवन पटना, 1973
2. डॉ ० याकूब मसीह "सामान्य धर्म दर्शन एवं दार्शनिक विश्लेषण"
3. वैशेषिक दर्शन
4. मीमांसा दर्शन
5. कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक ऐंगल्स , "धर्म" अनुवादक एवं संपादक , रमेश सिन्हा , द्वितीय संस्करण, इण्डियन पब्लिशर्स लखनऊ 1972
6. दैनिक जागरण हिंदी दैनिक
7. हिन्दुस्तान हिंदी दैनिक
8. Sigmund Freud, "A Philosophy of Life" in Essays in Philosophy, Edited by H. Peterson, Pocket Edition, 1959
9. Philosophy Magazine
10. http://hindi.speakingtree.in/pragya-abhiyan-shantikunj
11. http://hindi.webdunia.com/religious-article/ bZ'oj&,d&
12. http://literature.awgp.org/book/bhartiya_sanskruti_ke_aadharbhoot_tatva/v1.25
13. https://www.speakingtree.in/blog/hindu-dharm-philosphy-darshan-shastra
14. https://hi.wikipedia.org/s/ehm
15. https://hi.melayukini.net/wiki/Freud%27s_psychoanalytic_theories
16. https://hi.melayukini.net/wiki/Sigmund_Freud%27s_views_on_religion
17. https://hi.wikiqube.net/wiki/Freud_and_Philosophy
18. https://hi.vvikipedla.com/wiki/sigmund_freud
19. https://en.wikipedia.org/wiki/Sigmund_Freud%27s_views_on_religion
20. https://omprakashkashyap.wordpress.com/
21. Google and Internet sources